**मॉडल मदरसा प्रणाली**

परिचय

मदरसों का इस्लामिक शिक्षाओं के प्रचार और अस्तित्व में बहुत बड़ा स्थान है और उन्होंने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में एक ज़बरदस्त काम कर रहे हैं। इसलिए, कोई भी उनकी सेवाओं और महत्व से इनकार नहीं कर सकता है। हालांकि  वर्तमान में, विशेष रूप से उत्तरी भारत में, उनमें आधुनिक शिक्षा का अभाव है। उनमें से ज्यादातर Secondary and Senior Secondary level तक सरकार द्वारा अनुमोदित आधुनिक शिक्षा के लिए NCERT कोर्सवर्क नहीं पढ़ा रहे हैं। इसके कई कारण हैं: अगर वे NCERT को पढ़ाना भी चाहें तो उनके पास वर्तमान मदरसा शिक्षा प्रणाली में इसकी क्षमता नहीं है। सबसे बड़ा कारण समय, क्षमता,  वित्तीय साधन और बुनियादी सुविधाओं की कमी है।

यद्यपि भारत सरकार पंजीकृत मदरसों को इस्लामी शिक्षा के साथ आधुनिक शिक्षा प्रदान करने के लिए बुनियादी ढांचे और अन्य सुविधाओं को बढ़ाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है।  इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये परियोजनाएं कुछ हद तक मदरसों में सुविधाओं को बढ़ाने में मदद करती हैं, लेकिन एक ही समय में इस्लामी और आधुनिक शिक्षा को पढ़ाने के लिए कोई प्रणाली नहीं है और न उसके लिए कोई कोशिश है ।

मॉडल मदरसा प्रणाली में यही प्रयास है कि मदरसों की शैक्षिक प्रणाली में सुधार हो जाये ताकि वे इस्लामी शिक्षाओं के साथ-साथ सरकार और समुदाय की अपेक्षाओं को पूरा कर सकें। वे इस्लामी शिक्षा को कम किये बिना, आधुनिक शिक्षा NCERT के मुताबिक़ दे सकें। बलकि दोनों शिक्षाऐं उच्च कोटि की हों। वर्तमान प्रस्तावित प्रणाली इसी उद्देश्य के लिए है और इस प्रकार हमने इसे एक नया नाम  M- NCERT दिया   है  (मदरसा NCERT  प्रणाली के साथ)।  इस प्रणाली के तहत, सामान्य ढंग से 3 भागों में 10 साल की पढ़ाई  होगी:

1. पूर्व प्राथमिक – 5 वर्ष ;
2. प्राथमिक - 3 वर्ष;
3. मध्य- 3 वर्ष;
4. उच्च माध्यमिक (Senior Secondary) - 2 वर्ष।

इस प्रकार, 12 वर्षों में 3 पाठ्यक्रम (मौलवी, हिफ़्ज़े कुरान और उच्च माध्यमिक, Senior Secondary) एक साथ पूरे किए जायेंगें और बच्चें  उनके Certificates प्राप्त कर सकेंगें। इसके अलावा  चार भाषाओं (उर्दू, अरबी, अंग्रेजी और हिंदी) में  सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना (LSRW) की आवश्यक क्षमता उनमें पैदा होगी।

आख़री 2 वर्षों में सीनियर सेकेंडरी के छात्र फारसी और संस्कृत का भी अध्ययन करेंगे।

यहां यह स्पष्ट करना बहुत ज़रूरी है कि यह प्रस्ताव मदरसा नहीं है बल्कि मदरसे के शिक्षण में सुधार का एक सिस्टम है। इस प्रणाली के तहत मदरसों के शिक्षकों को इस तरह से प्रशिक्षित किया जाएगा कि वे स्वयं एकीकृत / समग्र शिक्षण पद्धति के माध्यम से पूरी आवश्यक शैक्षिक आवश्यकता को पूरा कर सकें। इस प्रणाली के तहत अधिक वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता नहीं होगी।

उम्मीद है, अगर मदरसे इस प्रणाली को अपनाते हैं, तो उनसे पढ़ कर निकलने वाले छात्र आवश्यक सभी सुविधाओं से लैस होंगे। और वे मदरसों के अलावा किसी भी क्षेत्र में दाखिला लेकर और इन क्षेत्रों में इस्लाम का परिचय करने के साथ अपने योग्यता को बढ़ा सकेंगे। जो छात्र धार्मिक शिक्षा में विशेषज्ञता प्राप्त करके धर्म की सेवा करने का निर्णय लेते हैं, वे बड़े मदसों (दारूल उलूम) में दाखिला लेकर इस आवश्यकता को पूरा कर सकेंगे।

चूंकि यह प्रणाली सरकार और समुदाय दोनों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी और मदरसे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होंगे , इसलिए हम भारत सरकार से अपील करते हैं कि एक केंद्रीय मदरसा बोर्ड  (Central Madarsa Board) की स्थापना की जाय  जहाँ इस प्रणाली पर काम कर रहे मदरसों और उनके द्वारा दी जाने वाली  डिग्री के कार्यक्रम को मान्यता प्रदान  की जाय ताकि देश और राष्ट्र के विकास की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि हो सके। देश के सभी बुद्धिजीवियों और बाअसर लोगों से भी आग्रह है कि वे अपने अधिकारों और क्षमताओं का उपयोग कर समुदाय की इस महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करने मै सहयता परदान करें।